गीत गाती चलो

(महिला आन्दोलन में गीत-संगीत)

कमला भसीन

'सबला' के पिछले अंक में महिला आंदोलनों में बहनों द्वारा रचे गए गीतों पर बात की गई थी। इन गीतों का महिला-जागृति एवं विकास में बहुत योगदान है। ये गीत औरतों के दुख दर्द, खुशी, उल्लास, संघर्ष, लड़ाई, गुस्सा हर भावना को दर्शाते हैं।

हमने बहुत सारे गीत बैठकों, कार्यशालाओं प्रदर्शनों, महिला दिवस मोर्चों तथा अन्य सामाजिक अवसरों पर गाए हैं। सेवा, लखनऊ की औरतें तीन चार प्रेरक गीत गाने के बाद ही अपना रोज़ का काम शुरू करती हैं। उन्हें लगता है, इससे वे बेहतर काम कर पाती हैं।

बिहार में स्कूलों की एक निरीक्षिका ने सरकार द्वारा चलाये जाने वाले लड़कियों के लगभग एक हजार स्कूलों में हमारा एक गीत (इरादे कर बुलंद तू जीना शुरू करती तो अच्छा था) सुबह की प्रार्थना की तौर पर गवाना शुरू किया। सुबह-सुबह धार्मिक गीत गाने की जगह हज़ारों लड़कियां नारीवादी गीत गाती हैं। उत्तरप्रदेश में महिला सशक्तता के एक कार्यक्रम ने अपने अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में एक गीत (मिलकर हम नाचेंगे गाएंगे) अपनाया है। इसे वहां बच्चे भी गाना खूब पसन्द करते हैं। हमारे कुछ गीतों का प्रयोग पोस्टरों में भी किया गया है। पांच छः गीतों पर लघु फिल्में और टेलीविजन के लिए 'स्पौट्स' भी बनाए गए हैं। कई गीत महिला पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और नवसाक्षरों के लिए पुस्तकों में भी इस्तेमाल हुए हैं।

गानों के ज़रिए हमारी चुप्पी और मन के बंधन टूटने में मदद मिली है। हममें से कुछ अपने दुखों के बारे में बात करने की जगह गीत गाने में सरलता महसूस करती हैं। ज्यों-ज्यों हमारा आत्मविश्वास बढ़ा है और हमने सामुदायिक्ता की भावना विकसित की है, हम खुली हैं। हमने अपने दुख-सुख, सपने, तमन्नाएं आपस में बांटे हैं।

जब धुनें तेज़ हों और शब्द उमंग भरे तो औरतों के लिए अपने मन और शरीर को नाचने से रोक पाना कठिन होता है। इसलिए कई बार गीतों की महफ़िल नाच में बदल जाती है और हम सब एक नई ऊर्जा, अपनापन और जुड़ाव महसूस करती हैं। गीत हमारी कार्यशालाओं में संजीवनी बूटी का काम करते हैं जहां आमतौर पर चर्चा के मुद्दे गंभीर, जटिल और तकलीफ़देह होते हैं। कार्यशाला के दौरान नाच गाने का एक दौर अचानक हुई बरसात की तरह होता है जिससे कुछ देर के लिए गंभीरता और दर्द की धूल साफ़ हो जाती है। नाच और गाने की छुट्टी, चाय-कॉफ़ी की छुट्टी से ज़्यादा ताकत और ताज़गी दे जाती है। वास्तव में जो लोग दूर से हमारी इन कार्यशालाओं को देखते

हैं और हर बार कुछ घंटों बाद हमें गाते नाचते पाते हैं, उन्हें विश्वास नहीं होता कि इन बैठकों व कार्य-शालाओं में हम कुछ गंभीर काम भी करती हैं। हम यह मानती हैं कि काम और मज़ा, सीखना और आनन्द साथ-साथ संभव ही नहीं है, जब्कि यह होना ही चाहिए।

गीतों के माध्यम से जुड़ाव

मुझे लगता है, गीत गाना ही सिर्फ़ एक ऐसा माध्यम है जिसके साथ अन्य लोग तुरन्त जुड़ जाते हैं, जहां कई आवाज़ें एक होकर ताक़तवर बन जाती हैं, जिससे हर एक सशक्त महसूस करता है और सामुदायिकता की भावना पैदा होती है। बुद्धि और भावना जुड़ जाती हैं, शरीर और मस्तिष्क जुड़ जाता है, मस्ती और गंभीरता जुड़ जाती है। संगीत, भाषा की दीवारों से ऊपर उठ पाता है। जब आप गाते हैं तो कोई ऊंचा-नीचा नहीं रहता, खासतौर पर जब मैं गाती हूं क्योंकि, मैं बहुत अच्छी गायिका नहीं हूं। हर समूह में कुछ अच्छा गाने और बेहतर नाचने वाली होती हैं जो बागडोर संभाल लेती हैं। गाने वालों और न गाने वालों के बीच, साक्षरों व निरक्षरों के बीच भेद नहीं रहता। अचानक नई नेता उभर आती हैं। वे जो चर्चाओं के दौरान चुप थीं, नाचने और गाने का हुनुर दिखाने लगती हैं। प्रायः औरतें नए गीत बनाने लगती हैं। उनकी रचनात्मकता सारे बंधन तोड़कर बह निकलती है।

गीत लिखने और गाने के द्वारा हमें इतिहास में अपनी नारीवादी जड़ें ढूंढने में भी मदद मिली है। जब हमने लोकगीतों तथा पिछली अनेक सदियों में महिला सन्तों द्वारा लिखे गए गीतों को देखना शुरू किया तो उनमें हमें हमारी नारीवादी विरासत मिली क्योंकि हमने देखा कि किस तरह हमारी पुरखिनों ने पितृसत्तात्मक बंधनों को तोड़ा था; अपनी रचनात्मकता की अभिव्यक्ति के लिए मौजूदा आज़ाद जगहों का खूबसूरत इस्तेमाल किया था; अपने गुस्से, घुटन, इच्छाओं और सपनों को शब्दों का जामा पहनाया था।

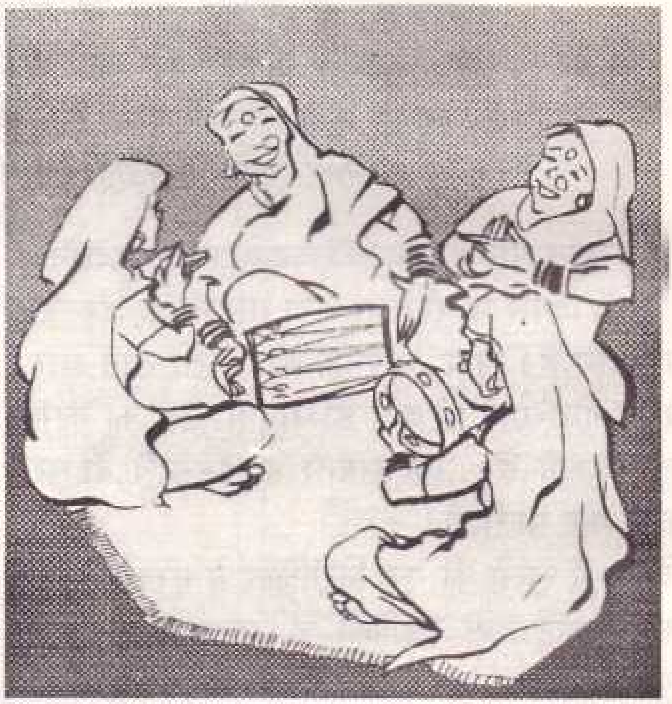

लोकगीतों में औरतों का विरोध तथा अपनी ज़िंदगी इज़्ज़त से जीने की इच्छा खूब दिखाई देती है। अपनी पुरखिनों से इस जुड़ाव के जरिए हमें नई ताकत मिली है और हमारे वर्तमान नारीवाद को लम्बी, गहरी, मज़बूत जड़ें मिली हैं।

गीतों की क्रांतिकारी सम्भावनाएं

चूंकि गीत लोगों के दिल और दिमाग में रहते हैं उन्हें जब्त करना, जलाना या रोक लगाना संभव नहीं है। हवा की तरह वे कहीं भी पहुंच कर गुनगुना सकते हैं। पाकिस्तान में राष्ट्रपति ज़ियाउलहक़ के समय में जब किसी भी तरह की राजनैतिक कार्रवाई या अभिव्यक्ति के लिए जगह

नहीं थी लोगों ने अपना विरोध जताने के लिए गीतों का सहारा लिया। फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' की क्रांतिकारी कविताएं तथा बुल्लेशाह व शाह हुसैन जैसे सूफ़ी सन्तों के गीत गाना राजनैतिक विरोध का सबसे असरदार तरीका बन गया था। चूंकि राजनैतिक प्रदर्शनों व बैठकों की इजाज़त नहीं थी, पाकिस्तान के विमैन्स ऐक्शन फ़ोरम ने औरतों के मेले लगाए, बाहरी तौर पर जिनका मक़सद मनोरंजन खाना-पीना और खरीदारी था। अधिकारियों ने ऐसे मेले लगाने की इजाज़त बिना यह जाने दे दी कि राजनैतिक नाटक और गीत इन मेलों की ख़ासियत थे। स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान राष्ट्रीय नेता अदालतों, पुलिस थानों आदि में गीत गाने लगते थे। इस प्रकार के गीत लोगों को प्रेरित करते हुए जंगल की आग की तरह फैल गए थे।

> **लोकगीतों में औरतों का विरोध तथा अपनी ज़िंदगी इज़्ज़त से जीने की इच्छा खूब दिखाई देती है। अपनी पुरखिनों से इस जुड़ाव के ज़रिए हमें नई ताक़त मिली है और हमारे वर्तमान नारीवाद को लम्बी, गहरी, मज़बूत जड़ें मिली हैं।**

"सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है"

आज हम अपने इन गीतों को बड़े शानदार, ऊंची सुरक्षा वाले सम्मेलनों में ले जाती हैं ताकि वातावरण अनौपचारिक हो सके, चर्चाओं में भावना पैदा हो सके तथा अनुत्पादक गंभीरता और पदानुक्रम टूटे। मुझे याद है हमने ऐसी कई भय पैदा करने वाली जगहों पर, जहां प्रधानमंत्री व अन्य मंत्री और अधिकारी मौजूद थे, गाया था। सिर्फ़ औरतें ही ऐसे काम करने की हिम्मत कर सकती हैं और बच भी सकती हैं।

हम सबमें एक मीरा है

हमारे गीतों के शब्द हालांकि बड़े लोकप्रिय हैं, परन्तु कोई साहित्यिक नहीं हैं। जाने माने कवि और गीतकार कहीं अधिक अच्छा लिखते हैं। हमारे कैसेटों में गायकी भी बहुत ऊंचे दर्जे की नहीं है, क्योंकि हम पेशेवर और प्रशिक्षित गायकों का इस्तेमाल भी नहीं करते। हमारी गुणवत्ता में नुक्स ढूंढे जा सकते हैं, परन्तु हम नहीं चाहते कि रचनात्मकता पर सिर्फ़ विशेषज्ञों का एकाधिकार हो। हमारा मानना है कि हर एक गा सकता है, नाच सकता है। कई लोग गीत लिख सकते हैं और उन्हें ऐसा करने के लिए उत्साहित करना चाहिए। सिर्फ़ सर्वोत्तम का इस्तेमाल करने से बाकी झिझक जाएंगे।

उसी प्रकार से अगर गीत झरने की तरह हमारे दिलों से फूट पड़ते हैं तो कौन कह सकता है कि उन्हें रोक दो, क्योंकि मीरा बाई या दूसरे कवि बेहतर लिख सकते हैं। मीरा बाई ने ज़रूर बड़े सुन्दर गीत लिखे हैं, परन्तु हम सबके भीतर जो एक मीरा है उसका क्या? हमारी रचनात्मकता का क्या होगा? जैसे मैंने गीत लिखने शुरू किए वैसे ही आन्दोलन में अनेक लोगों ने किया है। अत्यधिक रचनात्मकता नदी की तरह बह निकली है, जिसने हमें आत्म सम्मान और आत्म विश्वास दिया है। हमारी रचनाएं दूसरों की तुलना में सबसे अच्छी ना हों, परन्तु वे हमारी सबसे अच्छी रचनाएं हैं और वही महत्वपूर्ण हैं। मैं सोचती हूं कि यह बहुत ही बढ़िया बात है कि महिला आन्दोलन ने हमें रचनात्मक होने का मौक़ा और जगह दी है। अलग अलग रंगों, रूपों और खुशबुओं के फूल खिलें, फलें, फूलें।

(क्रमशः पृष्ठ 25 पर)

गीत गाती चलो (पृष्ठ 5 का शेष भाग)

मौखिक परम्पराओं पर आधारित माध्यमों को सशक्त करने की ज़रूरत

मुझे लगता है कि लोगों के साथ सच्ची सहभागिता बनाने के लिए, जन संघर्षों में भाग लेने और उसे समर्थन देने के लिए, औरतों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए, आमने सामने के सम्पर्क तथा जन माध्यमों के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। मेरा विश्वास है कि विकेन्द्रीकृत नागरिक समुदाय बनाना, तथा ऐसी जीवनचर्या अपनाना जो निरन्तर चल सके, बहुत आवश्यक है तथा इस स्तर पर आमने सामने का मौखिक सम्पर्क ही सबसे अधिक असरदार होता है। अतः हमें मौखिक परम्परा पर आधारित, कम कीमती व कम तकनीकी माध्यमों से सीखना चाहिए और उन्हें मज़बूत करने का अर्थ होगा कि हम अतीत की नींव पर रचना करेंगे, लोगों के हुनर व जानकारी से सीखेंगे, उसे समर्थन देंगे, समानतापूर्ण सम्बन्ध व वार्तालाप शुरू करेंगे और अपनी ज़मीन से जुड़े रहेंगे। मौखिक परम्पराओं के साथ काम करने से यह भी सुनिश्चित होगा कि हम 'निरक्षरों' को दरकिनार नहीं करेंगे। 'माध्यम निर्माता' 'माध्यम उपभोक्ता' से अलग नहीं होंगे हमारे संदेश मुनाफ़ा कमाने का साधन नहीं बनेंगे। □

(अनुवाद : वीणा शिवपुरी)

नोट : 'सबला के पिछले अंक में इस लेख के साथ प्रकाशित–चलो आओ बहनों... पंक्तियां विभूति पटेल के इसी शीर्षक के गीत से ली गई थीं।'